Class VI

संकेत-बिंदु कहानी लेखन

संकेत बिंदु

खेत के किनारे ..... नीम का वृक्ष था। उस वृक्ष ..... था। एक चिड़िया आई। उसने ... ... कौए आई! : मिलकर खेती .... आधा-आधा लेना ..... । कौआ का राजी हो जाना। चिड़िया के साथ ..... बीज बोना। कौआ का बैठा रहना। ठंडा पानी पीकर आता है। कौए का बैठा रहना। चिड़िया का कहना - पौधे बड़े हो गए - निराई कर आते। कौए का नहीं जाना, फसल पक गई कौए का जाना अपना आधा हिस्सा लेने, चिड़िया का उड़ते थोड़ा अनाज देना और चले जाना, कौए का अनाज वहीं पड़ा रहा, बारिश का आना, अनाज का बह जाना।

शीर्षक - आलसी कौआ

खेत के किनारे एक नीम का वृक्ष था। उस वृक्ष पर एक कौआ रहता था। कुछ दिनों बाद वहाँ एक चिड़िया आई। उसने कौए से कहा, "कौए भाई! चलो, मिलकर खेती करते हैं। जो अनाज पैदा होगा, उसे मिलकर आधा-आधा बाँट लेंगे।" कौआ राज़ी हो गया।

अगले दिन चिड़िया ने कौए से कहा, "भाई, चलो खेत में बीज बो देते हैं।"

चिड़िया की बात सुनकर कौआ फिर बोला, "तू चल, मैं आता हूँ। ठंडा पानी पीता हूँ। हरी डाल पर बैठा हूँ।" चिड़िया बीज भी बो आई। कौआ वहीं बैठा रहा।

कुछ दिनों बाद चिड़िया कौए के पास आकर बोली, "कौए भाई, पौधे बड़े हो गए हैं। चलो, निराई कर आते हैं।" कौए ने उसे फिर से वही उत्तर दिया। चिड़िया अकेली ही निराई कर आई। फ़सल पककर तैयार हो गई। चिड़िया ने सारी फ़सल काट भी ली। कौआ उसकी मदद करने नहीं गया। जब अनाज तैयार हो गया, तब कौआ अपना आधा हिस्सा लेने चिड़िया के पास जा पहुँचा। उसे देखकर चिड़िया बोली, "तुम्हें अनाज में हिस्सा मिलना तो नहीं चाहिए, फिर भी मैं तुम्हें थोड़ा अनाज दे देती हूँ।" उसने कौए को थोड़ा अनाज दे दिया और अपना अनाज लेकर चली गई। आलसी कौए का अनाज वहीं पड़ा रहा। अगले दिन ज़ोर की वर्षा हुई और उसका अनाज पानी में बह गया। कौआ डाल पर बैठा काँव-काँव करता रह गया।

शिक्षा—आलसी सदैव हानि उठाता है, अत: कभी आलस्य नहीं करना चाहिए।

खेत के किनारे एक नीम का वृक्ष था। उस वृक्ष पर एक कौआ रहता था। कुछ दिनों बाद वहाँ एक चिड़िया आई। उसने कौए से कहा, "कौए भाई! चलो, मिलकर खेती करते हैं। जो अनाज पैदा होगा, उसे मिलकर आधा-आधा बाँट लेंगे।" कौआ राज़ी हो गया।

अगले दिन चिड़िया ने कौए से कहा, "भाई, चलो खेत में बीज बो देते हैं।"

चिड़िया की बात सुनकर कौआ फिर बोला, "तू चल, मैं आता हूँ। ठंडा पानी पीता हूँ। हरी डाल पर बैठा हूँ।" चिड़िया बीज भी बो आई। कौआ वहीं बैठा रहा।

कुछ दिनों बाद चिड़िया कौए के पास आकर बोली, "कौए भाई, पौधे बड़े हो गए हैं। चलो, निराई कर आते हैं।" कौए ने उसे फिर से वही उत्तर दिया। चिड़िया अकेली ही निराई कर आई। फ़सल पककर तैयार हो गई। चिड़िया ने सारी फ़सल काट भी ली। कौआ उसकी मदद करने नहीं गया। जब अनाज तैयार हो गया, तब कौआ अपना आधा हिस्सा लेने चिड़िया के पास जा पहुँचा। उसे देखकर चिड़िया बोली, "तुम्हें अनाज में हिस्सा मिलना तो नहीं चाहिए, फिर भी मैं तुम्हें थोड़ा अनाज दे देती हूँ।" उसने कौए को थोड़ा अनाज दे दिया और अपना अनाज लेकर चली गई। आलसी कौए का अनाज वहीं पड़ा रहा। अगले दिन ज़ोर की वर्षा हुई और उसका अनाज पानी में बह गया। कौआ डाल पर बैठा काँव-काँव करता रह गया।

शिक्षा—आलसी सदैव हानि उठाता है, अतः कभी आलस्य नहीं करना चाहिए।

2. एकता में बल है